भारतीय लोकतंत्र एवं मतदान व्यवहार : एक अध्ययन

डॉ० कलसिंह पटेलिया

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गढ़ाकोटा
जिला, सागर (म.प्र.)

सारांश –

भारतीय लोकतंत्र के प्रमुख पहलू के रूप में जनता को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार दिया गया है। मतदान व्यवहार का सामान्य अर्थ मतदाताओं की उस मन : स्थिति से होता है, जिससे प्रभावित होकर कोई मतदाता मतदान करता है। मतदान व्यवहार का अध्ययन चुनाव अध्ययनों का एक हिस्सा हैं। चुनावों के अध्ययन के विषय को सेफोलॉजी कहते हैं। चुनाव लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की आत्मा होती है। सामान्यतः भारत में, मतदान करते समय मतदाता व्यक्ति की कार्यकुशलता, नैतिकता, पार्टी सिद्धांत, चरित्र आदि को महत्व देने की बजाय जाति, धर्म क्षेत्र और धन को महत्व देते हैं।

मूल शब्द : – लोकतंत्र, चुनाव, मतदान, व्यवहार, मतदाता।

परिचय –

''लोकतंत्र'' शब्द पहली बार प्राचीन यूनानी राजनीतिक और दर्शनिक विचार में शास्त्रीय पुरातनता के दौरान एथेंस के शहर राज्य में दिखाई दिया। यह शब्द ग्रीक शब्द डॅमोस 'आम लोग और क्रेथेस ताकत से आया है। इसकी स्थापना 508–507 ईसा पूर्व में एथेनियाई द्वारा की गई थी। और इसका नेतृत्व क्लीस्थेनेस ने किया था। क्लेस्थेनेस को ''एथेनियन लोकतंत्र का जनक'' के रूप में भी जाना जाता हैं।

भारत में लोकतंत्र –

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। वर्ष 1947 में अपनी स्वतंत्रता के बाद भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र बन गया। इसके बाद भारत के नागरिक को वोट देने का अधिकार प्राप्त हुआ है। और अपने नेताओं को चुनने का अधिकार दिया गया। भारत में यह अपने नागरिकों को उनकी जाति रंग, पंथ, धर्म और लिंग के बावजूद वोट देना का अधिकार देता है। इसके पांच लोकतांत्रिक सिद्धांत है – संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और गणतंत्र। लोकतंत्र सरकार की एक प्रणाली है जिसमें नागरिक सीधे सत्ता का प्रयोग करते है या अपने बीच से प्रतिनिधियों का चुनाव करके एक शासी निकाय बनाते है, जैसे कि संसद। इसे ''बहुमत का शासन'' भी कहा जाता है। यहां सत्ता विरासत में नहीं मिलती। लोग अपने नेताओं का चुनाव करते हैं। प्रतिनिधि चुनाव में खड़े होते हैं और नागरिक अपने प्रतिनिधि के लिए वोट देते है। सबसे ज्यादा वोट पाने वाले प्रतिनिधि को सत्ता मिलती है।

मतदान व्यवहार –

मतदान व्यवहार का आशय है कि मतदाता अपने मताधिकार के प्रयोग में किन तत्वों से प्रभावित होता है। मतदान व्यवहार में सर्वप्रथम तो यह अध्ययन किया जाता है कि कौन–सा तत्व व्यक्ति को मताधिकार का प्रयाग करने के लिए प्रेरित और कौन–से तत्व उसे इस संबंध से निरूत्साहित करते हैं। द्वितीय स्तर पर इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किन तत्वों से प्रभावित होकर व्यक्ति एक विशेष

उम्मीदवार और एक विशेष राजनैतिक दल के पक्ष में अपना मताधिकार का प्रयोग करता है। इस दृष्टि से मतदान व्यवहार का अध्ययन चुनाव के पूर्व भी किया जाता है। और चुनाव के बाद भी। मतदान व्यवहार का अध्ययन बीसवीं सदी की ही एक प्रक्रिया है। सर्वप्रथम फ्रांस में 1913 में मतदान व्यवहार का अध्ययन किया गया। इसके बाद अमेरीका में दो विश्व युद्धों के बीच के काल में और ब्रिटेन में महायुद्ध के बाद मतदान व्यवहार का अध्ययन किया गया।

भारत में द्वितीय आम चुनाव के बाद इस प्रकार के अध्ययनों को अपनाया गया और अभी हाल ही के वर्षों में इस विषय पर प्रचुर साहित्य प्रकाशित हुआ जो अनुभविक एवं वस्तुनिष्ठ सर्वेक्षण पर आधारित है। ''मतदान व्यवहार मतदाताओं का ऐसा व्यवहार होता है जो उनकी पसंद वरीयताओं, विकल्पों, विचारधाराओं, चिंताओं, समझौतों इत्यादि का स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है। ये कारक समाज व राष्ट्र के विभिन्न मुद्दों से संबंधित होते है।''

दूसरे शब्दों में मतदान व्यवहार एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है, जिसके तहत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि सार्वजनिक चुनाव में लोग किस प्रकार मतदान करते है। यानी मतदान के समय व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा मतदान के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाने वाला मनोभाव मतदान व्यवहार कहलाता हैं।

मतदान व्यवहार की अवधारणा –

भारतीय लोकतंत्र के प्रमुख पहलू के रूप में जनता को सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार दिया गया है। जनता ने अपने मताधिकार में किस दृष्टिकोण का प्रयोग किया है यह एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक पहलू है जो कि भारतीय लोकतंत्र को आम चुनाव के माध्यम से एवं राजनीतिक दलों की प्रतिबद्धता एवं निष्ठा वौध के द्वारा यह प्रतिपादिन करने का प्रयास करता है कि भारतीय जनता की लोकतंत्र के प्रति आस्था रूचि क्या है, वह कहा तक जागरूक है। इन सभी बातों को मतदान व्यवहार से जाना जाता है। मतदान व्यवहार का अर्थ है कि मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने में किन–किन बातों से प्रभावित होता है। मताधिकार करने में कौस से कारक व्यक्ति को प्रेरित करते है और कौन से कारक हतोत्साहित करते है और कौन से कारक व्यक्ति को एक विशेष उम्मीदवार या दल विशेष के लिए प्रेरित करते है।

मतदान व्यवहार की विशेषताएं –

1. मतदान व्यवहार के माध्यम से राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलती है। राजनीतिक समाजीकरण से आशय उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से लोगों में राजनीतिक समझ विकसित की जाती है। राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया का मूल उद्देश्य राजनीतिक सिद्धांतों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित करना होता है।
2. मतदान व्यवहार के माध्यम से इस बात की जांच की जा सकती है कि लोगों के मन में लोकतंत्र के प्रति धारण कैसी है। इसके माध्यम से समाज के प्रत्येक वर्ग की लोकतंत्र के प्रति सोच को समझने में सहायता मिलती हैं। यानि यदि कोई व्यक्ति अधिकार या दायित्व बोध महसूस करते हुए मतदान करता है, तो उसे लोकतंत्र के प्रति आस्थावान समझने के कारण यदि कोई व्यक्ति नोटा के रूप में मतदान करता है, तो इसका अर्थ यह है कि वह व्यक्ति मताधिकार का उपयोग तो करना चाहता हैं, लेकिन वर्तमान में वह किसी भी उम्मीदवार या उनके द्वारा उठाए जाने वाले मुद्दों को पसंद नहीं करता हैं।
3. मतदान व्यवहार इस बात को भी प्रदर्शित करता है कि चुनावी राजनीति किस सीमा तक पूर्ववर्ती राजनीतिक मुद्दों से संबंध रखती है। यदि गहराई से अवलोकन करें तो स्पष्ट होगा कि प्रत्येक चुनाव में कुछ चुनावी मुद्दे हर बार लगभग समान होते है।

उदाहरण के लिए गरीबी बेरोजगारी विकास, महगाई इत्यादि मुद्दों के इर्द–गिर्द प्रत्येक चुनाव घूमता हैं। इसका अर्थ यह है कि मतदाता इन मुद्दों से काफी हद तक प्रभावित होकर मतदान करता है। इसलिए प्रत्येक चुनाव में ये मुद्दे चुनावी राजनीति का हिस्सा होते हैं।

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक –

भारत में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले ऐसे विभिन्न कारक मौजूद है इनमें से कुछ प्रमुख कारकों का विवरण निम्नुसार है–

1. **जाति** – भारत की सामाजिक संरचना जाति व्यवस्था से अत्यधिक प्रभावित है, इसलिए भारतीय निर्वाचन प्रणाली में इसका अच्छा खासा प्रभाव होता है राजनेता के राजनीतिक दल जाति के आधार पर वोट हासिल करने का प्रयास करते हैं। इसी संदर्भ में रजनी कौठारी ने यह कहा भी था कि भारत की राजनीति जातिवादी हैं और भारत में जातियां राजनीतिकृत हैं।
2. **धर्म** – विभिन्न रानीतिक दल और राजनेता चुनावी लाभ अर्जित करने के लिए धार्मिक भावनाओं को भड़काते है और इनके वशीभूत होकर लोगों का मतदान व्यवहार प्रभावित हो जाता है। इसके परिणाम स्वरूप चुनावी नतीजे भी प्रभावित होते हैं।
3. **भाषा** – भारत में भाषाओं के आधार पर भी राजनीति में कई राज्य में ''भाषा'' मुख्य चुनावी मुद्दा रहा हैं। भाषा भी लोगों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।
4. **क्षेत्रवाद** – दक्षिण भारत और उत्तर भारत की और पूर्वोत्तर की राजनीति में क्षेत्रवाद का मुद्दा बहुत अधिक प्रभावी होता हैं विभिन्न चुनावों के दौरान अनेक राजनेताओं के संबंध में दूसरे राज्यों के लोग बाहरी होने का आरोप लगाते है और इस बात का प्रयास करते है कि इस राज्य के लोग किसी अन्य राज्य के व्यक्ति को वोट न दें। यह कारक भी लोगों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करता हैं।
5. **मतदाता की आर्थिक स्थिति** – ऐसे मतदाता चुनाव में अधिक रूचि लेते हैं जिनकी आर्थिक स्थिति बेहतर होती है। इसके विपरीत निर्धन मतदाता, दिहाड़ी मजदूर , रेहड़ी पटरी वाले लोग अपनी दैनिक मजदूरी की कीमत पर मतदान को प्राथमिकता नहीं दे पाते है। यदि निर्धन लोग मतदान को प्राथमिकता देगें तो इससे उनकी दैनिक मजदूरी पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। अतः मतदाता की आर्थिक स्थिति भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करती है।
6. **धन की भूमिका** – चुनावों में किया जोने वाला धन का प्रयोग भी लोगों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करता हैं, जिससे प्रभावित होकर मतदाता अपनी मतदान की प्राथमिकता में परिवर्तन कर देते है और इससे चुनावी परिणामों में भी परिवर्तन हो जाता हैं।
7. **विचारधारा** – किसी राजनीतिक दल द्वारा प्रतिपादित राजनीतिक विचारधारा का मतदाताओं के निर्णय लेने पर प्रभाव पड़ता है। समाज में कछ लोग साम्प्रदायिकता, पूँजीवाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, विकेन्द्रकरण आदि जेसी कुछ विचारधाराओं के प्रति प्रतिबद्ध हैं। ऐसे लोग उन विचारधाराओं के मानने वाले दलों द्वारा खड़े किए गए उम्मीदवारों का समर्थन करते है।

निष्कर्ष –

लोकतांत्रिक देश में चुनाव एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह भारत के बारे में भी सत्य हैं। 1951–52 से भारत में राष्ट्रीय एवं क्षेत्रिय स्तर पर चुनाव हुए है। लोग विभिन्न जाति, धर्म, भाषाओं, लिंग से संबंध रखते हैं। वे इनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। चुनाव में भी यह कारक मतदान व्यवहार के प्रमुख निर्धारक होते है। लेकिन यह कारक तब बहुत अधिक प्रभावशाली बन जाते है जब ये लोगों की आर्थिक जरूरतों से जुड़ जाते है। भारत में कई प्रकार के चुनाव होते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. डॉ. बी. एल फाड़िया और पुखराज जैन, ''भारतीय शासन एवं राजनीति'' साहित्य भवन पब्लिकेशन।
2. डॉ. श्रीमति कल्पना वैश्य, ''भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार'' नवभारत प्रकाशन।
3. रजनी कोठरी, ''भारत में राजनीति कल और आज'' वाणी प्रकाशन।
4. मिथलेस कुसारी : भारत में चुनाव और मतदान व्यवहार श्रृखला – एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका वोल्यूम 05 इश्यू 4 दिसम्बर 2017 ।
5. लीकौक : एलीमेंट्स ऑफ पॉलिटिकल साईंस 1929 पृ. 209–210।
6. पुखराज जैन भारतीय शासन एवं राजनीति प्रकाशन वर्ष 2011 साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा पेज 697 ।